रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० ए० के० पटेल) (क) और (ख) नाइट्रोजन और फास्फेट न्यूट्रिएंट के रूप में उर्वरकों के उत्पादन में देश में 1994-95 से दिए गए विवरण के ब्यौरों (नीचे देखिये) के अनुसार वृद्धि हुई है। यूरिया की कोई कमी नहीं हुई है जो कि एक नियंत्रित उर्वरक है। तथापि, डाई अमोनियम फास्फेट (डी ए पी) के संबंध में राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों में रबी मौसम के दौरान इस समय स्थानीकृत कमियां महसूस की जा रही है। ऐसा निम्नलिखित के कारण हुआ: (i) अक्तूबर-नवम्बर, 98 महीनों के दौरान लगभग 7.5 लाख मी० टन आयात की वंचिंग हो गई जिसके कारण डी ए पी की पूर्व आपूर्ति नहीं की जा सकी। (ii) जे एन पी टी और विज़ाग नामक दो पत्तनों पर लगभग 5 लाख मीट्रिक टन डी ए पी का जमावड़ा हो गया जिसके फलस्वरूप भीड़भाड़ हो गई और परिणामस्वरूप इन पत्तनों से संचलन में विलम्ब हुआ। (iii) विज़ाग पत्तन पर चक्रवाती तूफान की वजह से रेकों का संचलन लगभग 16 दिनों के लिए प्रभावित हुआ (iv) गेहूं बोये जाने वाले क्षेत्र में वृद्धि के कारण सर्वाधिक मांग में वृद्धि हो गई।

(ग) सरकार ने इसमें हस्तक्षेप किया है और राज्यों में समय से डी ए पी पहुंचाने के लिए विभिन्न उपाय किए हैं । जे एन पी टी और विज़ाग बन्दरगाहों पर डीएपी जहाजों की वर्थिंग के लिए प्राथमिकता प्रदान की गई है। इसके अलावा दोनों संयंत्रों और बन्दरगाहों से डी ए पी की रेल द्वारा पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों में जहां मौसम के दौरान अधिक आवश्यकता है, संचलन को प्राथमिकता प्रदान की गई है। इसके अलावा इंडियन पोटाश लि० के माध्यम से प्राथमिकता के आधार पर जोर्डन से 55000 मी० टन डी ए पी का अतिरिक्त आयात किया गया है।

(घ) 1998-99 के लिए (30.11.1998 तक) यूरिया, डी ए पी और एम ओ पी जिनका आयात किया जाता है, के भारित औसत लागत भाड़ा मूल्य निम्नानुसार हैं:—

यूरिया : 101 14 अमरीकी डालर
डी ए पी * : 220 68 अमरीकी डालर
एम ओ पी* : 112 21 अमरीकी डालर

*उपलब्ध सूचना के अनुसार।

विवरण

नाइट्रोजन और फास्फेट

(000 मी० टन उत्पादन)

उर्वरक/न्यूट्रिएंट	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98	1998-99
नाइट्रोजन	7945.4	8777.0	8599.4	19985.6	6844.8*
फास्फेट	2495.8	2558.0	2555.9	2975.9	1975.9*

* 1 अप्रैल, 98 से 30 नवम्बर, 98 तक

उर्वरक कम्पनियों की लाभ हानि

1403. **श्री चीमनभाई हरीभाई शुक्ला:** क्या रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) गत तीन वर्षों के लिए सरकारी, सहकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों के अधीन आने वाली उर्वरक कंपनियों की लाभ व हानि की अद्यतन स्थिति क्या है;

(ख) क्या इन में से कोई कंपनी घाटे मे चल रही है, यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं:

(ग) क्या सरकार का इन्हें लाभप्रद बनाने हेतु कुछ योजनाएं तैयार करने उपाय करने का विचार है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं तो उसके क्या कारण है?

रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० ए०के० पटेल): (क) से (घ) इस विभाग के नियंत्रणाधीन सार्वजनिक/सहकारी क्षेत्र के उर्वरक उपक्रमों को गत तीन वर्षों के दौरान हुई लाभ/हानि निम्न प्रकार हैं:—

(रु०/करोड़)

क्रम सं०	सार्वजनिक/सहकारी क्षेत्र के उपक्रम का नाम	1995-96	1996-97	1997-98
01.	नेशनल फर्टिलाइजर्स लि० (एनएफएल)	54.06	11.20	189.01
02.	फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल्स ट्रावनोर लि० (एफएसीटी)	76.76	61.78	53.94
03.	राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लि० (आरसी एफ)	74.33	76.88	189.37
04.	पाराद्वीप, फास्फेट लि० (पीपीएल)	02.22	(-) 60.63	(-) 105.53
05.	मद्रास फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एमएफएल)	21.07	12.10	(-) 55.35
06.	पाइराइट्स फास्फेटस एण्ड केमिकल्स लिमिटेड (पीपी सीएल)	(-) 00.65	(-) 08.28	(-) 41.80
07.	फर्टिलाइजर कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (एफसीआई)	(-) 471.31	(-) 538.02	(-) 724.93
08.	हिन्दुस्तान फर्टिलाइजर कार्पोरेशन लिमिटेड (एचएफसी)	(-) 474.41	(-)532.64	647.83
09.	प्रोजेक्ट्स एण्ड डेवलपमेंट इंडिया लिमिटेड (पीडीआई एल)	22.52	31.82	06.09
10.	कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड (कृभको)	201.95	229.38	299.61
11.	इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर ओर आपरेटिव लिमिटेड (इफको)	132.32	166.42	438.85

उर्वरक विभाग निजी क्षेत्र की उर्वरक कम्पनियों के लाभ/हानि का प्रक्षेपन नहीं करता।

उपर्युक्त में से सार्वजनिक क्षेत्र के एचएफसी, एफसीआई, पीपीसीएल, पीपीएल और एमएफएल नामक पांच उपक्रम हानि उठा रहे हैं। इनकी हानि के मुख्य कारण नीचे दिये गये हैं:—

उपक्रमों का पुरानापन, बिजली की कमी और फालतू जनशक्ति एफसीआई तथा एचएफसी द्वारा उठाई जा रही हानि के मुख्य कारण हैं। जहां तक पीपीसीएल का सम्बन्ध है, पाइराइट्स आधारित सल्फयूरिक एसिड उत्पादन की आन्तरिक लागत हानि और मसूरी में गहरे भूमिगत खनन की बढ़ती हुई लागतें महत्वपूर्ण कारण हैं। जहां तक पीपीएल का सम्बन्ध है, ठेका श्रमिक समस्याएं, फास्फोरिक एसिड संयंत्र के कम क्षमता उपयोग के कारण उत्पादन की उच्च लागत तथा विनिमय दर में उतार-चढ़ाव महत्वपूर्ण कारण हैं । एमएफएल द्वारा उठाई जा रही हानियों के लिये, पुनरुद्धार परियोजना को चालू करने में विलम्ब और बढ़ी हुई फीड स्टाक लागतें महत्वपूर्ण कारणों में से हैं।

विनिवेश आयोग द्वारा की गई सिफारिशों तथा बीआईएफआर द्वारा अनुमोदित किये जाने वाले पुनर्वास पैकेज, जैसा भी मामला हो, के आधार पर सरकार हानि उठा रही उपर्युक्त कम्पनियों के नियंत्रणाधीन एककों की—प्रौद्यो—आर्थिक व्यवहार्यता को ध्यान में रखते हुये समुचित कदम उठाने का विचार रखती है। एफसीआई तथा एचएफसी बीआईएफआर को निर्दिष्ट की गई है तथा विस्तृत पुनर्वास प्रस्तावों पर अन्तर—मंत्रालय विचार—विमर्श किये जा रहे हैं। विनिवेश आयोग ने एनएफएल, एफएसीटी, एमएफएल और पीपीसीएल के सम्बन्ध में अपनी सिफारिशें दे दी हैं। विनिवेश आयोग ने एमएफएल के 50% शेयर एक प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से अनुकूल भागीदार को बेचने की सिफारिश की है। सरकार ने एमएफएल के सम्बन्ध में विनिवेश आयोग की सिफारिशों को सिद्धान्ततः अनुमोदित कर दिया है। इस आयोग द्वारा एफएसीटी, पीपीसीएल और एमएफएल के बारे में की गई सिफारिशों के सम्बन्ध में सरकार द्वारा कोई निर्णय नहीं लिया गया है। पीपीएल को वर्ष 1994 में पर्याप्त राहतें दी गई थीं जिनमें अन्यों के साथ-साथ इसके पूंजी आधार का पुनर्गठन शामिल है। योजनागत ऋणों के पुनर्भुगतान तथा वर्ष 1997-98 के दौरान देय ब्याज के भुगतान को एक वर्ष के लिये आस्थगित कर दिया गया था। सल्फयूरिक एसिड संयंत्र के क्षमता उपयोग में आ रही बाधाओं पर काबू पाने हेतु एक स्कीम भी तैयार की गई है।

Revival Plan for IDPL

1404. SHRI J. CHITHARANJAN:
SHRI GURUDAS DASGUPTA:

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to refer to answer to Unstarred Question 2596 given in the Rajya Sabha on the 10th July, 1998 and state:

(a) whether Government have since finalised the revised rehabilitation plan for the IDPL;

(b) if so, the details thereof; and

(c) if not, the reasons for the delay?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (DR. A.K. PATEL): (a)